

दानियेल की पुस्तक - संख्या चौतीस

दानियेल का रहस्योद्घाटन: पृथ्वी के इतिहास और परमेश्वर के न्यायों के माध्यम से एक भविष्यसूचक यात्रा

Jeff Pippenger

2023-12-29

दानियेल की पुस्तक के पहले छह अध्याय प्रकाशितवाक्य तेरह में वर्णित पृथ्वी के पशु का इतिहास दर्शाते हैं। संयुक्त राज्य अमेरिका (पृथ्वी का पशु) 1798 में बाइबिल की भविष्यवाणी के छठे राज्य के रूप में आरंभ हुआ, जब पापाई शक्ति (प्रकाशितवाक्य तेरह का समुद्र का पशु) को भविष्यसूचक घातक घाव लगा और उसने बाइबिल की भविष्यवाणी के पाँचवें राज्य के रूप में अपना शासन समाप्त कर दिया।

पृथ्वी के पशु का इतिहास, परमेश्वर के न्यायों के निकट आने की चेतावनी का इतिहास है। पृथ्वी के पशु के इतिहास की शुरुआत में परमेश्वर का अन्वेषणात्मक न्याय आरंभ हुआ, और पृथ्वी के पशु के अंत में परमेश्वर का कार्यकारी न्याय आरंभ होता है। आरंभ में परमेश्वर के अन्वेषणात्मक न्याय के निकट आने की चेतावनी प्रकाशितवाक्य अध्याय चौदह के पहले स्वर्गदूत के संदेश द्वारा दर्शाई गई थी, जो "समय के अंत" में 1798 में आया। अंत में परमेश्वर के कार्यकारी न्याय के निकट आने की चेतावनी प्रकाशितवाक्य अध्याय चौदह के तीन स्वर्गदूतों के संदेशों के रूप में प्रस्तुत की गई है, जो "समय के अंत" में 1989 में आए।

हर "अंत के समय" पर दानिएल की पुस्तक के किसी हिस्से की मुहर खोल दी जाती है। पृथ्वी के पशु के प्रारंभिक इतिहास में, 1798 में, दानिएल के अध्याय सात, आठ और नौ की मुहरें खोल दी गईं। इन अध्यायों को उलै नदी के दर्शन के रूप में प्रस्तुत किया गया है। पृथ्वी के पशु के समापन इतिहास में, 1989 में, दानिएल के अध्याय दस, ग्यारह और बारह की मुहरें खोल दी गईं। इन अध्यायों को हिदेकेल नदी के दर्शन के रूप में प्रस्तुत किया गया है। जब भी दानिएल की पुस्तक की मुहर खोली जाती है, उस समय जीवित पीढ़ी पर तीन-चरणीय परीक्षण की प्रक्रिया लागू की जाती है।

और उसने कहा, हे दानियेल, तू चला जा; क्योंकि ये बातें अन्त-समय तक बन्द और मुहरबन्द रखी गई हैं। बहुत-से लोग शुद्ध किए जाएँगे, उजले बनाए जाएँगे, और परखे जाएँगे; परन्तु दुष्ट दुष्टता ही करते रहेंगे; और दुष्टों में से कोई न समझेगा; पर बुद्धिमान समझेंगे। दानियेल 12:9, 10.

तीन-चरणीय परीक्षात्मक प्रक्रिया उस इब्रानी शब्द की संरचना पर आधारित है जिसका अनुवाद "सत्य" किया जाता है, जो इब्रानी वर्णमाला के पहले, तेरहवें और अंतिम अक्षरों को मिलाकर बना है। वह इब्रानी शब्द परमेश्वर की सृजनात्मक शक्ति का प्रतिनिधित्व करता है और उसमें वही शक्ति निहित है। समस्त भविष्यसूचक सत्य उसी शब्द पर आधारित है, और दानियेल अध्याय बारह में वर्णित तीन-चरणीय परीक्षात्मक प्रक्रिया भी उसी पर आधारित है। वह शब्द केवल परमेश्वर की सृजनात्मक शक्ति का ही प्रतिनिधित्व नहीं करता, बल्कि यीशु मसीह का भी, जो सत्य हैं, और जो प्रथम और अंतिम भी हैं, जैसा कि इब्रानी वर्णमाला के प्रथम और अंतिम अक्षरों द्वारा दर्शाया गया है।

पृथ्वी के पशु का आरंभिक इतिहास, जब जाँच-पड़ताल के न्याय के निकट आने की चेतावनी 1798 में अंत के समय पर पहुँची, प्रकाशितवाक्य अध्याय चौदह के पहले स्वर्गदूत द्वारा दर्शाया गया है। प्रकाशितवाक्य अध्याय चौदह में पहले स्वर्गदूत का संदेश तीनों चरणों को समाहित करता है, जो सत्य हैं, और जो उस तीन-चरणीय परीक्षण प्रक्रिया का प्रतिनिधित्व करते हैं, जिसका सामना उस पीढ़ी को 1798 में पहले स्वर्गदूत के आगमन के समय करना पड़ा।

और मैंने एक और स्वर्गदूत को आकाश के मध्य में उड़ते हुए देखा, जिसके पास पृथ्वी पर रहने वालों और हर जाति, कुल, भाषा और लोगों को सुनाने के लिए अनन्त सुसमाचार था; वह ऊँचे स्वर से कहता था, परमेश्वर का

भय मानो, और उसे महिमा दो; क्योंकि उसके न्याय की घड़ी आ गई है: और उसकी उपासना करो, जिसने आकाश और पृथ्वी और समुद्र और जल के सोते बनाए। प्रकाशितवाक्य 14:6, 7.

धरती के पशु का समापन इतिहास—जब 1989 में अंत के समय कार्यकारी न्याय के निकट आने की चेतावनी पहुँची—का प्रतिनिधित्व प्रकाशितवाक्य के अध्याय चौदह के तीन स्वर्गदूत करते हैं। प्रकाशितवाक्य चौदह के ये तीन स्वर्गदूत तीन चरणों का प्रतिनिधित्व करते हैं, जो सत्य हैं, और यही तीन स्वर्गदूत उस तीन-चरणीय परीक्षण प्रक्रिया का भी प्रतिनिधित्व करते हैं जिसका सामना उस पीढ़ी ने किया जो 1989 में तीसरे स्वर्गदूत के आगमन के समय जीवित थी।

और मैंने देखा कि एक और स्वर्गदूत आकाश के बीचोंबीच उड़ता हुआ आया, जिसके पास पृथ्वी पर बसने वालों को, और हर एक जाति, कुल, भाषा और लोगों को सुनाने के लिए अनन्त सुसमाचार था। वह ऊँचे शब्द से कहता था, “परमेश्वर से डरो, और उसे महिमा दो; क्योंकि उसके न्याय की घड़ी आ पहुँची है; और उसकी आराधना करो, जिसने आकाश और पृथ्वी और समुद्र और जल के सोतों को बनाया।” फिर एक और स्वर्गदूत उसके पीछे आया, यह कहता हुआ, “बाबुल, वह बड़ा नगर, गिर गया, गिर गया; क्योंकि उसने अपने व्यभिचार के क्रोध की दाख-मदिरा सब जातियों को पिला दी।” और तीसरा स्वर्गदूत उनके पीछे-पीछे आया, ऊँचे शब्द से यह कहता हुआ, “यदि कोई पशु और उसकी प्रतिमा की आराधना करे, और अपने माथे पर या अपने हाथ पर उसका चिह्न ले, तो वही परमेश्वर के क्रोध की उस दाख-मदिरा को पिएगा, जो उसके रोष के कटोरे में बिना मिलावट उंडेली गई है; और पवित्र स्वर्गदूतों और मेम्ने के सामने उसे आग और गंधक से यातना दी जाएगी। और उनकी यातना का धुआँ युगानुयुग ऊपर उठता रहेगा; और जो पशु और उसकी प्रतिमा की आराधना करते हैं, और जो कोई उसके नाम का चिह्न लेता है, उन्हें दिन-रात विश्राम न मिलेगा।” यहाँ पवित्र लोगों का धैर्य है: यहाँ वे हैं जो परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन करते हैं और यीशु पर विश्वास रखते हैं। प्रकाशितवाक्य 14:6-12.

दानियेल की पुस्तक की संरचना तीन स्वर्गदूतों के संदेशों पर आधारित है। वह संरचना 'सत्य' के लिए प्रयुक्त हिब्रू शब्द के तीन चरणों, तथा उनके अनुरूप तीन-चरणीय परीक्षण-प्रक्रिया—दोनों को समेटे हुए है; परन्तु परीक्षण-प्रक्रिया प्रकाशितवाक्य के तेरहवें अध्याय के पृथ्वी से उठने वाले पशु (संयुक्त राज्य) की ऐतिहासिक रेखा पर, और उसी पृथ्वी-पशु के दो सींगों (गणतंत्रवाद और प्रोटेस्टेंटवाद) की ऐतिहासिक रेखा पर प्रकट होती है। संयुक्त राज्य का इतिहास, जो 1798 से आरम्भ होकर शीघ्र आने वाले रविवार के कानून तक चलता है, वही ऐतिहासिक अवधि है जिसमें सप्तम-दिवसीय ऐडवेंटिस्ट कलीसिया अस्तित्व में है। अतः दानियेल की पुस्तक में वह संरचना भी सम्मिलित है जो 1798 से आरम्भ होकर शीघ्र आने वाले रविवार के कानून तक ऐडवेंटिज़्म के इतिहास को चित्रित करती है। ऐसा करते हुए, दानियेल की पुस्तक उन्हीं भविष्यवाणी-संबंधी इतिहासों की पहचान कराती है जो प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में प्रस्तुत हैं, और इस प्रक्रिया में वह पहली गवाही प्रदान करती है, जो दूसरी गवाही के संदेश को परिपूर्णता तक पहुँचाती है। इन दोनों पुस्तकों की परिपूर्णता उसी भविष्यवाणी-संबंधी परिघटना के द्वारा सम्पन्न होती है, जो पुराने नियम और नए नियम के परस्पर संबंध में विद्यमान थी।

परमेश्वर के पुत्र के रूप में यीशु के जीवन, मृत्यु और पुनरुत्थान का इतिहास, पुराने नियम में निहित प्रमाणों के बिना पूर्णतः सिद्ध नहीं किया जा सकता। मसीह पुराने नियम में उतनी ही स्पष्टता से प्रकट हैं जितनी नए नियम में। एक आने वाले उद्धारकर्ता की गवाही देता है, जबकि दूसरा उस उद्धारकर्ता की गवाही देता है जो भविष्यद्वक्ताओं ने जिस प्रकार भविष्यवाणी की थी, उसी प्रकार आ चुका है। उद्धार की योजना को समझने के लिए पुराने नियम के शास्त्रों को भली-भांति समझना आवश्यक है। भविष्यद्वक्ताओं के अतीत से आने वाली महिमामय ज्योति ही मसीह के जीवन और नए नियम की शिक्षाओं को स्पष्टता और सौंदर्य के साथ उजागर करती है। यीशु के चमत्कार उनकी दिव्यता का प्रमाण हैं; परंतु कि वे संसार के उद्धारकर्ता हैं, इसके सबसे प्रबल प्रमाण पुराने नियम की भविष्यवाणियों की तुलना नए नियम के इतिहास से करने पर मिलते हैं। यीशु ने यहूदियों से कहा, 'पवित्र शास्त्रों की खोज करो; क्योंकि तुम समझते हो कि उनमें तुम्हारे लिए अनन्त जीवन है, और वे ही मेरी गवाही देते हैं।' उस समय पुराने नियम के सिवा और कोई शास्त्र अस्तित्व में नहीं था; इसलिए उद्धारकर्ता की यह आज्ञा स्पष्ट है। Spirit of Prophecy, खंड 3, 211.

'यीशु के जीवन, मृत्यु और पुनरुत्थान का इतिहास' मानवजाति के लिए मसीह के कार्य का सार प्रस्तुत करता है, और तीन चरणों की गवाही देता है, और वही तीन चरण 'सत्य' हैं। हिब्रानी शब्द 'सत्य' यीशु का प्रतिनिधित्व करता है, जो प्रथम और अंतिम, आदि और अंत, और अल्फा और ओमेगा हैं; और उस शब्द में पहले और अंतिम अक्षर शामिल हैं, जो उसी बात का प्रतिनिधित्व करते हैं, क्योंकि अल्फा और ओमेगा के रूप में यीशु किसी बात के अंत को उसके आरंभ के साथ दर्शाते हैं। मसीह का जीवन, मृत्यु और पुनरुत्थान 'सत्य' हैं, क्योंकि अन्य बातों के साथ-साथ वे तीन चरणों द्वारा प्रदर्शित होते हैं, और पहला तथा अंतिम चरण दोनों 'जीवन' हैं, क्योंकि 'जीवन' और 'पुनरुत्थान' दोनों 'जीवन' ही हैं। हिब्रानी शब्द का मध्य अक्षर वर्णमाला का तेरहवाँ अक्षर है, और तेरह विद्रोह का प्रतीक है, और मसीह की मृत्यु शैतान और आदम की संतानों के विद्रोह के कारण हुई, जो उसके विद्रोह में शामिल हो गए।

प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में 'यीशु मसीह का प्रकाशितवाक्य' की समझ की मुहर मानव अनुग्रह-काल के बंद होने से ठीक पहले खोल दी जाती है, और उस समय खोली गई सच्चाई का एक मुख्य तत्व यह है कि मसीह 'सत्य' हैं, अल्फा और ओमेगा, जो अपने वचन में विद्यमान रहने के लिए जिन्हें उन्होंने ठहराया है, उन सत्यों पर अल्फा और ओमेगा के रूप में अपनी मुहर लगाते हैं। जब बहन व्हाइट ने लिखा, "परमेश्वर के पुत्र के रूप में यीशु के जीवन, मृत्यु और पुनरुत्थान का इतिहास, पुराने नियम में निहित साक्ष्य के बिना पूरी तरह सिद्ध नहीं किया जा सकता। मसीह पुराने नियम में उतने ही स्पष्ट रूप से प्रकट हैं जितने नए नियम में," तो वह, जो देखेंगे उनके लिए, यह पुष्टि कर रही है कि प्रकाशितवाक्य अध्याय चौदह में तीन स्वर्गदूतों के संदेश (जो उसी तीन चरणों—'जीवन, मृत्यु और पुनरुत्थान'—पर भी संरचित हैं) दानिय्येल की पुस्तक में निहित साक्ष्य के बिना "पूरी तरह सिद्ध नहीं किए जा सकते।"

वह यह भी इंगित करती है कि दानिय्येल की पुस्तक ऐसे बाबुल की गवाही देती है जो "आने वाला" है, जबकि प्रकाशितवाक्य की पुस्तक उस बाबुल की गवाही देती है जो दानिय्येल की पुस्तक में की गई भविष्यवाणी के अनुसार "आ चुका है"। आगे, यह अनुप्रयोग बताता है कि प्रकाशितवाक्य की पुस्तक को "सराहने के लिए" दानिय्येल की पुस्तक को "भली-भांति समझा जाना चाहिए", क्योंकि दानिय्येल की पुस्तक से मिलने वाला "वह महिमामय प्रकाश" ही प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में "मसीह के जीवन और शिक्षाओं को उजागर करता है" "स्पष्टता और सुंदरता के साथ"।

उनके शब्दों को इस प्रकार भी समझा जा सकता है कि प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में प्रस्तुत 'यीशु के चमत्कार' 'उसके ईश्वरत्व का प्रमाण हैं; परन्तु यह कि वह संसार का उद्धारकर्ता है, इसके सबसे प्रबल प्रमाण तब मिलते हैं' जब दानिय्येल की पुस्तक की भविष्यवाणियों की प्रकाशितवाक्य की पुस्तक के 'इतिहास से तुलना की जाती है'। आगे यह भी समझा जा सकता है कि जब 'यीशु ने यहूदियों से कहा, "पवित्रशास्त्रों की खोज करो; क्योंकि तुम समझते हो कि उनमें तुम्हें अनन्त जीवन है, और वही मेरे विषय में गवाही देते हैं," तो आज के आत्मिक यहूदियों के लिए दानिय्येल की पुस्तक वही है जो यीशु मसीह के प्रकाशितवाक्य की गवाही देती है, और वह प्रकाशितवाक्य, जिसकी मुहरें अनुग्रहकाल के समापन से ठीक पहले खोली जाती हैं, वहीं अनन्त जीवन मिलता है।

दानिय्येल की पुस्तक उन भविष्यसूचक सत्यों को प्रस्तुत करती है, जो प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में अपनी परिपूर्णता तक पहुँचते हैं। यह "सत्य" के हिब्रानी शब्द द्वारा दर्शाए गए तीन चरणों पर संरचित है, और इसलिए, जब ये तथ्य मुहर हटने पर प्रकट किए जाते हैं, उस पीढ़ी के लिए यह पुस्तक स्वयं एक परीक्षा का प्रतिनिधित्व करती है। यीशु स्वयं, अल्फा और ओमेगा के रूप में, प्रकाशितवाक्य की पुस्तक के बिल्कुल पहले शब्दों और अध्याय में सीधे तौर पर बल दिया गया है। इन लेखों ने यह भी दिखाया है कि दानिय्येल अध्याय एक में वही भविष्यसूचक संरचना और विशेषताएँ हैं जो प्रकाशितवाक्य अध्याय चौदह के प्रथम स्वर्गदूत के संदेश की हैं।

पहले स्वर्गदूत का संदेश और दानिय्येल अध्याय एक—दोनों—उस तीन-चरणीय परीक्षण प्रक्रिया की पहचान करते हैं जो आल्फा और ओमेगा की विशेष पहचान है। यह अध्याय शाब्दिक बाबुल द्वारा शाब्दिक यहूदा को जीत लेने से आरम्भ होता है, और यह पुस्तक दानिय्येल अध्याय ग्यारह की अंतिम छह आयतों में चित्रित बाबुल और यहूदा के बीच अंतिम युद्ध तक ले जाती है। उन आयतों में, जैसे ही मीकाएल खड़ा होता है और मनुष्य का परीक्षाकाल समाप्त होता

है, आध्यात्मिक बाबुल को आध्यात्मिक यहूदा द्वारा पराजित किया जाता है। वे आयतें बाबुल और यहूदा के बीच युद्ध के भविष्यसूचक इतिहास का अंत दर्शाती हैं। उन्हीं आयतों में घातक घाव के चंगे होने का चित्रण किया गया है।

घातक घाव के भरने का वर्णन करने वाली आयतें दानिय्येल 11 के पद 40 से शुरू होती हैं, जो इन शब्दों से आरम्भ होता है, "और अंत के समय". उस पद में "अंत का समय" 1798 का प्रतिनिधित्व करता है, जब पापाई सत्ता को उसका घातक घाव लगा था। इसके बाद आयतें यह कहानी बताती हैं कि वह घातक घाव कैसे भरता है, क्योंकि पापाई सत्ता पहले अपने शत्रु, दक्षिण का राजा (सोवियत संघ), दूसरे अपने सहयोगी, महिमामय देश (संयुक्त राज्य), और तीसरे अपने शिकार, मिस्र (संयुक्त राष्ट्र) को परास्त करती है। पद 45 में पापाई सत्ता (उत्तर का राजा) का अंत हो जाता है, और उसकी सहायता करने वाला कोई नहीं होता। इन आयतों में पापाई सत्ता के घातक घाव के भरने की कहानी 1798 में पापाई सत्ता के पतन से शुरू होती है, और पापाई सत्ता के अंतिम उदय और पतन पर समाप्त होती है। खंड की शुरुआत और समापन के बीच की आयतें बीच के विद्रोह को दर्शाती हैं।

"सत्य" के लिए हिब्रू शब्द, हिब्रू वर्णमाला के पहले, तेरहवें और अंतिम अक्षरों को मिलाकर बनाया गया था। तेरह एक ऐसा अंक है जो विद्रोह और प्रथम तथा अंतिम के बीच के इतिहास का प्रतीक है। दानिय्येल की पुस्तक में भविष्यवाणी के अंतिम खंड में वही संघर्ष चित्रित है जो पुस्तक के बिल्कुल प्रारंभिक पदों में चित्रित है। वे पद अध्याय एक का परिचय देते हैं, जहाँ हमें परीक्षण की तीन-चरणीय प्रक्रिया मिलती है, जो सत्य को निरूपित करती है। तदुपरांत, अंतिम खंड में हमें वही तीन चरण मिलते हैं: यह पापाई सत्ता के पहले पतन से शुरू होता है और पापाई सत्ता के अंतिम पतन पर समाप्त होता है, तथा बीच में अंतिम दिनों का विद्रोह समाहित है।

दानिय्येल अध्याय ग्यारह की अंतिम छह आयतों में सत्य का दूसरा साक्षी है, क्योंकि पहली भौगोलिक सत्ता जिसे पापसी को उखाड़ फेंकना आवश्यक था (दक्षिण का राजा) अजगर की शक्ति का प्रतीक है, जैसे तीन भौगोलिक सत्ताओं में अंतिम (मिस्र) भी है। घातक घाव के भरने के लिए आवश्यक तीन-चरणीय विजय दक्षिण के राजा से आरम्भ होती है, जो नास्तिकता की अजगर-शक्ति का प्रतीक है, और तीन शक्तियों में अंतिम, जो मिस्र द्वारा दर्शाई गई है, अजगर से जुड़ी नास्तिकता का प्राथमिक बाइबलीय प्रतीक है। वास्तव में, उस खंड की आयत चालीस में "south" के रूप में अनूदित शब्द "नेगेब" है, जिसे कभी-कभी मिस्र के रूप में भी अनुवादित किया जाता है। ये तीन बाधाएँ सत्य की मुहर रखती हैं, क्योंकि पहली बाधा ही अंतिम बाधा है। बीच की सत्ता महिमामय देश (संयुक्त राज्य) है। संयुक्त राज्य वही स्थान है जहाँ रविवार के कानून के माध्यम से विद्रोह कराया जाता है, और जब इसकी शुरुआत हुई तो संयुक्त राज्य का प्रतीक तेरह उपनिवेश थे।

अल्फा और ओमेगा की छाप दानिय्येल की पुस्तक में सर्वत्र व्याप्त है, और यह ऐसी गवाही देती है कि जब इसे प्रकाशितवाक्य की पुस्तक के साथ मिलाकर देखा जाता है, तो यीशु मसीह का ईश्वरत्व स्थापित होता है। दानिय्येल अध्याय बारह के संदर्भ में, और उस तीन-चरणीय परीक्षण प्रक्रिया के संदर्भ में जो उस पीढ़ी में घटित होती है जब इस पुस्तक की मुहर खोली जाती है; दानिय्येल की पुस्तक की संरचना के प्रकटीकरण को अस्वीकार करना, उन लोगों में गिने जाना है जो दुष्ट के रूप में पहचाने गए हैं। प्रकाशितवाक्य अध्याय चौदह के संदर्भ में, दानिय्येल की पुस्तक की संरचना के प्रकटीकरण को अस्वीकार करना, उन लोगों में गिने जाना है जो उस पशु और उसकी मूर्ति की आराधना करने वालों के रूप में पहचाने गए हैं।

प्रकाशितवाक्य की पुस्तक यह बताती है कि अनुग्रह काल के समाप्त होने से ठीक पहले यीशु मसीह के प्रकाशितवाक्य की मुहर खोल दी जाती है, और यीशु मसीह के इस प्रकाशितवाक्य में दानिय्येल की पुस्तक की संरचना की मुहर खोले जाने का भी समावेश है।

राज्य के दायित्वों और विश्वव्यापी आधिपत्य रखने वाले साम्राज्यों के रहस्यों में सहभागी बनकर मनुष्यों द्वारा सम्मानित, दानिय्येल को परमेश्वर ने अपने राजदूत के रूप में सम्मानित किया, और उसे आने वाले युगों के रहस्यों के अनेक प्रकाशन दिए गए। उसके नाम की पुस्तक के अध्याय 7 से 12 में दर्ज उसकी अद्भुत भविष्यवाणियाँ स्वयं भविष्यद्वक्ता द्वारा भी पूरी तरह समझी नहीं गईं; परन्तु उसके जीवन-कार्य के समाप्त होने से पहले, उसे

यह धन्य आश्वासन दिया गया कि 'दिनों के अंत में'—इस संसार के इतिहास के समापन काल में—उसे फिर से अपने भाग और स्थान में खड़े होने की अनुमति दी जाएगी। ईश्वरीय उद्देश्य के विषय में परमेश्वर ने जो कुछ प्रकट किया था, उसका सब कुछ समझना उसे नहीं दिया गया था। 'वचनों को बन्द कर दे, और पुस्तक पर मुहर लगा दे,' उसकी भविष्यवाणी लेखन के विषय में उसे यह निर्देश दिया गया; ये 'अन्तकाल तक' मुहरबंद रहनी थीं। स्वर्गदूत ने यहोवा के विश्वासयोग्य दूत को फिर से निर्देश दिया: 'दानिय्येल, तू अपने मार्ग पर चला जा; क्योंकि वचन अन्तकाल तक बन्द और मुहरबंद हैं.... तू अन्त तक अपने मार्ग पर चला जा; क्योंकि तू विश्राम करेगा, और दिनों के अंत में अपने भाग में खड़ा होगा।' दानिय्येल 12:4, 9, 13.

जैसे-जैसे हम इस संसार के इतिहास के अंत के निकट पहुँच रहे हैं, दानिय्येल द्वारा लिखी गई भविष्यवाणियाँ हमारे विशेष ध्यान की माँग करती हैं, क्योंकि वे उसी समय से संबंधित हैं जिसमें हम जी रहे हैं। उनके साथ नए नियम की अंतिम पुस्तक की शिक्षाओं को भी जोड़ा जाना चाहिए। शैतान ने बहुतों को यह मानने के लिए प्रेरित किया है कि दानिय्येल और रहस्यदर्शी यूहन्ना की रचनाओं के भविष्यवाणी संबंधी अंश समझे नहीं जा सकते। परन्तु प्रतिज्ञा स्पष्ट है कि इन भविष्यवाणियों के अध्ययन के साथ विशेष आशीष जुड़ी रहेगी। 'ज्ञानी समझेंगे' (पद 10), यह दानिय्येल के उन दर्शनों के विषय में कहा गया था जिनकी मुहर अंत के दिनों में खोली जानी थी; और उस प्रकाशन के विषय में, जो मसीह ने अपने दास यूहन्ना को परमेश्वर की प्रजा के सदियों भर के मार्गदर्शन के लिए दिया, प्रतिज्ञा यह है, 'धन्य है वह जो पढ़ता है, और वे जो इस भविष्यवाणी के वचनों को सुनते हैं, और जो उसमें लिखी हुई बातों को मानते हैं।' प्रकाशितवाक्य 1:3। भविष्यद्वक्ताओं और राजाओं, 547.

अपने युग में भविष्यकाल की भाषा का प्रयोग करते हुए, बहन वाइट ने कहा, "जैसे-जैसे हम इस संसार के इतिहास के अंत के निकट आते हैं", "बुद्धिमान समझेंगे," कि "दानिय्येल द्वारा दर्ज की गई भविष्यवाणियाँ हमारे विशेष ध्यान की माँग करती हैं, क्योंकि वे उसी समय से संबंधित हैं जिसमें हम जी रहे हैं।" "आने वाले युगों के रहस्यों के अनेक प्रकाशन—उसके नाम वाली पुस्तक के अध्याय सात से बारह में दर्ज उसकी अद्भुत भविष्यवाणियाँ—अंतिम दिनों में खोली जानी हैं।"

जब दानिय्येल की पुस्तक की मुहर खोली जाती है, तो यह तीन-चरणीय शुद्धिकरण प्रक्रिया उत्पन्न करती है, जो उस पीढ़ी की परीक्षा लेती है जो उस समय जीवित होती है जब यहूदा के गोत्र का सिंह अपनी प्रजा को दानिय्येल की पुस्तक देता है। प्रकाशितवाक्य दस में, बहन वाइट हमें बताती हैं कि जो स्वर्गदूत उतरा था वह "स्वयं यीशु मसीह से कम कोई व्यक्तित्व नहीं था।" प्रकाशितवाक्य दस में, उस स्वर्गदूत के हाथ में खुली हुई एक छोटी पुस्तक थी, जिसे लेने और खाने की आज्ञा यूहन्ना को दी गई। उस पुस्तक की मुहर यहूदा के गोत्र के सिंह ने खोली, जो यीशु मसीह से कम कोई व्यक्तित्व नहीं है; इसलिए यूहन्ना को जिसे खाने की आज्ञा दी गई, वह दानिय्येल की छोटी पुस्तक थी।

यहूदा के गोत्र का सिंह ही वह था जिसने पुस्तक की मुहर खोली और यूहन्ना को यह प्रकट किया कि इन अंतिम दिनों में क्या होना है।

दानिय्येल अपनी गवाही देने के लिए अपने भाग में खड़ा रहा, जो अंत के समय तक मुहरबंद थी, जब हमारे संसार में पहले स्वर्गदूत का संदेश घोषित किया जाना था। ये बातें इन अंतिम दिनों में अत्यन्त महत्त्वपूर्ण हैं; परन्तु जबकि 'बहुतों को शुद्ध किया जाएगा, शुभ्र बनाया जाएगा, और परखा जाएगा,' 'दुष्ट दुष्टता करेंगे; और दुष्टों में से कोई न समझेगा।' यह कितना सत्य है! पाप परमेश्वर की व्यवस्था का उल्लंघन है; और जो लोग परमेश्वर की व्यवस्था के विषय में दी गई ज्योति को स्वीकार नहीं करेंगे, वे पहले, दूसरे और तीसरे स्वर्गदूतों के संदेशों की घोषणा को नहीं समझेंगे। दानिय्येल की पुस्तक की मुहर यूहन्ना को दिए गए प्रकाशितवाक्य में खोली गई है, और वह हमें इस पृथ्वी के इतिहास के अंतिम दृश्यों तक आगे ले जाती है।

"क्या हमारे बंधु यह ध्यान में रखेंगे कि हम अंतिम दिनों के खतरों के बीच जी रहे हैं? दानिय्येल के साथ जोड़कर प्रकाशितवाक्य पढ़िए। इन बातों को सिखाइए।" मंत्रियों के लिए गवाहियाँ, 115.

दानिय्येल की पुस्तक की संरचना के उस प्रकाशन को अस्वीकार करना, जिसकी मुहर अब खोली जा रही है, दुष्टों में गिने जाने के समान है। दानिय्येल के पहले छह अध्याय उस भविष्यसूचक संरचना की स्थापना करते हैं, जो एडवेंटवाद के भविष्यसूचक इतिहास, पृथ्वी से निकलने वाले पशु, यशायाह अध्याय तेईस के सत्तर सांकेतिक वर्षों, प्रोटेस्टेंटवाद और गणतंत्रवाद के दो सींगों, पहले और दूसरे स्वर्गदूतों के सन्देशों के भविष्यसूचक इतिहास, तथा तीन स्वर्गदूतों के सन्देशों के इतिहास का प्रतिनिधित्व करती है। दानिय्येल के अंतिम छह अध्याय उन भविष्यसूचक सन्देशों को चिन्हित करते हैं, जिनकी मुहरें इन सभी पूर्वोक्त इतिहासों के आरम्भ और अंत में खोली जाती हैं।

दानिय्येल का पहला अध्याय पृथ्वी के पशु के इतिहास की शुरुआत में पहले स्वर्गदूत के आंदोलन का इतिहास है। अध्याय एक से तीन पृथ्वी के पशु के इतिहास के अंत में तीसरे स्वर्गदूत के आंदोलन का इतिहास हैं। चौथा अध्याय शुरुआत के रूप में पहले अध्याय के साथ जोड़ा जाना है, और पाँचवाँ व छठा अध्याय, समापन के रूप में, अध्याय एक से तीन के साथ जोड़े जाने हैं। अध्याय सात, आठ और नौ में प्रस्तुत की गई ज्ञान की वृद्धि को शुरुआत के इतिहास के रूप में अध्याय एक के साथ जोड़ा जाना है। अध्याय दस, ग्यारह और बारह में प्रस्तुत की गई ज्ञान की वृद्धि को समापन इतिहास के रूप में अध्याय एक से तीन के साथ जोड़ा जाना है।

पंक्ति दर पंक्ति, यह अनुप्रयोग पृथ्वी के पशु के प्रारंभिक इतिहास को अध्याय एक, चार, सात, आठ और नौ के रूप में पहचानता है। यह अनुप्रयोग पृथ्वी के पशु के समापन इतिहास को भी अध्याय एक से तीन, अध्याय पाँच, छह तथा दस से बारह के रूप में पहचानता है। इस प्रकार, दानिय्येल की पुस्तक को पृथ्वी के पशु की शुरुआत और अंत, दोनों के रूप में प्रस्तुत किया गया है।

पृथ्वी के पशु की शुरुआत तब दानिय्येल के पहले अध्याय के रूप में पहचानी जा सकती है, क्योंकि अध्याय चार को अध्याय एक पर (पंक्ति पर पंक्ति) अध्यारोपित किया जाना है। अध्याय सात, आठ और नौ भी अध्याय एक पर अध्यारोपित किए जाने हैं। अतः पृथ्वी के पशु के इतिहास की शुरुआत का प्रतिनिधित्व दानिय्येल का पहला अध्याय करता है।

इसी तरह, पृथ्वी के पशु के अंत का भी यही हाल है। पृथ्वी के पशु के इतिहास का अंत अध्याय एक से तीन तक से दर्शाया गया है, और अध्याय पाँच, छह, दस, ग्यारह और बारह पहले तीन अध्यायों के ऊपर (पंक्ति पर पंक्ति) रखे जाने हैं; इस प्रकार, पृथ्वी के पशु के इतिहास का अंत दानिय्येल के पहले तीन अध्यायों से दर्शाया गया है।

अध्याय एक आरम्भ का प्रतिनिधित्व करता है और फिर अध्याय एक से तीन अंत का, और 'पहले एक, फिर तीन' की यह संरचना यह दर्शाती है कि दानिय्येल की पुस्तक की भविष्यवाणी की संरचना प्रकाशितवाक्य अध्याय चौदह के तीन स्वर्गदूतों की भविष्यवाणी की संरचना के समान है। वहाँ भी, जैसे दानिय्येल में, पहला स्वर्गदूत एक अलग इतिहास का प्रतिनिधित्व करता है, परन्तु साथ ही तीन स्वर्गदूतों के इतिहास का एक-तिहाई भी है। साथ ही, जैसे यह पहचान तीन और एक के संयोजन को रेखांकित और प्रमुख करती है, वैसे ही यह इब्रानी शब्द 'सत्य' की संरचना भी है, जो न केवल मसीह और परमेश्वर की सृजनात्मक शक्ति का प्रतिनिधित्व करता है, बल्कि तीन-चरणीय परीक्षा और शुद्धिकरण की प्रक्रिया का भी, जो दानिय्येल अध्याय एक में और फिर दानिय्येल अध्याय एक से तीन में भी प्रस्तुत की गई है।

यीशु, जो सत्य हैं, वही प्रथम और अंतिम भी हैं, और इसी संदर्भ में पहले स्वर्गदूत के आंदोलन का इतिहास तीनों स्वर्गदूतों के इतिहास में अक्षरशः दोहराया जाता है; इसलिए भविष्यसूचक दृष्टि से दानिय्येल के पहले तीन अध्यायों को दानिय्येल अध्याय एक के ऊपर रखना स्वीकार्य है, क्योंकि आरंभ सदैव अंत का चित्रण करता है। तब दानिय्येल की पुस्तक वही 'छोटी पुस्तिका' बन जाती है जो स्वर्गदूत के हाथ में है, क्योंकि दानिय्येल की 'छोटी पुस्तिका' का पूर्ण निरूपण दानिय्येल अध्याय एक में किया जा सकता है।

हम अगले लेख में दानिय्येल की पुस्तक के अपने अध्ययन को जारी रखेंगे।

राजकीय फरमान के प्रावधानों को लागू करने की तैयारी कर रहे अधिकारियों द्वारा जिनकी तलाश की जा रही थी, उनमें दानियेल और उसके मित्र भी शामिल थे। जब उन्हें बताया गया कि फरमान के अनुसार उन्हें भी मरना होगा, तो 'परामर्श और बुद्धिमानी के साथ' दानियेल ने राजा की रक्षक-सेना के प्रधान अर्योक से पूछा, 'राजा की ओर से यह आज्ञा इतनी उतावली क्यों है?' अर्योक ने उसे राजा के अद्भुत स्वप्न को लेकर उसकी उलझन की कथा बताई, और यह भी कि जिन्हें वह अब तक सबसे अधिक भरोसेमंद मानता आया था, उनसे उसे कोई सहायता न मिली। यह सुनकर दानियेल ने अपने प्राणों को हथेली पर रखकर राजा के सम्मुख जाने का साहस किया और निवेदन किया कि उसे समय दिया जाए, ताकि वह अपने परमेश्वर से प्रार्थना कर सके कि वह उसे वह स्वप्न और उसकी व्याख्या प्रकट करे।

इस निवेदन को राजा ने स्वीकार किया। 'तब दानियेल अपने घर गया, और उस बात को अपने साथियों हनन्याह, मीशाएल और अजर्याह को बता दिया।' वे सब मिलकर ज्योति और ज्ञान के स्रोत से बुद्धि माँगने लगे। उन्हें दृढ़ विश्वास था कि परमेश्वर ने उन्हें वहीं रखा है जहाँ वे हैं, कि वे उसका काम कर रहे हैं और अपने कर्तव्य की माँगों को पूरा कर रहे हैं। उलझन और संकट के समय वे सदा मार्गदर्शन और संरक्षण के लिए उसी की ओर मुड़े थे, और वह सदैव उपस्थित सहायक सिद्ध हुआ था। अब हृदय की दीनता और पश्चात्ताप के साथ उन्होंने पृथ्वी के न्यायाधीश के सम्मुख अपने आप को फिर से समर्पित किया, यह विनती करते हुए कि इस विशेष आवश्यकता के समय वह उन्हें छुटकारा प्रदान करे। और उनकी विनती व्यर्थ नहीं गई। जिस परमेश्वर का उन्होंने आदर किया था, उसने अब उनका आदर किया। प्रभु की आत्मा उन पर आ ठहरी, और दानियेल को 'रात्रि के दर्शन में' राजा का स्वप्न और उसका अर्थ प्रकट किया गया।

दानियेल का पहला कार्य था कि उसे दी गई प्रकाशना के लिए वह परमेश्वर का धन्यवाद करे। वह पुकार उठा, 'परमेश्वर का नाम सदा-सर्वदा धन्य रहे; क्योंकि ज्ञान और शक्ति उसी की हैं; वही समयों और कालों को बदलता है; वही राजाओं को हटाता और राजाओं को स्थापित करता है; वह बुद्धिमानों को बुद्धि देता है, और समझ रखने वालों को ज्ञान देता है; वह गूढ़ और गुप्त बातों को प्रकट करता है; वह जानता है कि अंधकार में क्या है, और प्रकाश उसके साथ वास करता है। मैं तेरा धन्यवाद करता हूँ और तेरी स्तुति करता हूँ, हे मेरे पितरों के परमेश्वर, क्योंकि तूने मुझे ज्ञान और शक्ति दी है, और अब तूने मुझे वह बात बता दी है जो हम ने तुझ से माँगी थी; क्योंकि तूने अब हमें राजा की बात बता दी है।' भविष्यद्वक्ता और राजा, 493, 494।